



DR. RAMKUIWANGBE JEME NEWME

Shri Ramkuiwangbe Jeme Newme is an eminent social worker from Assam. He is the Patron of the Zeliangrong Heraka Association, North East India.

2. Born on 25th May, 1947, Shri Newme obtained his Bachelor of Arts degree from Shillong Government College in 1975. He was appointed as Personal Assistant to heroic freedom fighter and spiritual luminary Ranima Gaidinliu in 1977. In 1980, Shri Newme was appointed as the Sub-Inspector of Schools under the North Cachar Hills District Council in Haflong and retired as District Primary Education Officer in 2011.

3. Shri Newme is the founder General Secretary of Zeliangrong Heraka Association, North East India in 1974. He condemns apostasy and revolted against forceful religious conversion in the North-East region and propagates indigenous culture and faith. His tremendous contribution towards women empowerment and girls education are widely known. He raised many deprived and impoverished students and helped them achieve their dreams.

4. Shri Newme was instrumental in 2009 peace talk by risking his life and resolving the ethnic conflict between Naga and Dimas community. He transcribed the Holy book Tingwang Hingde and authored the book Biography of Rani Ma Gaidinliu.

5. Shri Newme is a recipient of numerous prestigious awards. He has been conferred Shri Guruji Samaj Prabadhan Puruskar (1997) by Jana Kalyan Samati of Pune, Bombay in the name of Zeliangrong Heraka Association for preserving and promoting indigenous Heraka faith and culture and for social upliftment in the North-East region, Bhaorao Deoraj Smrity Sewa Samman (2010), Lucknow for his selfless service in protecting Heraka custom and religion, Vivekananda Kendra Institute of Culture Sanman (2015), Guwahati for his tireless efforts in inspiring several communities to re-connect with their ancestral faith and for nurturing inter-community and inter-regional bonds with his national vision and Doctor of Science {Honoris Causa} from NITTE University (2018), Mangalore for his substantial contribution for gender empowerment and overall development of North Eastern society.



डॉ. रामकुइवांगबे जेमे न्यूमे

डॉ. रामकुइवांगबे जेमे न्यूमे असम के एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह ज़ेलियनग्रोंग हेराका एसोसिएशन, नॉर्थ ईस्ट इंडिया के संरक्षक हैं।

2. 25 मई 1947 को जन्मे, डॉ. न्यूमे ने 1975 में शिलांग गवर्नमेंट कॉलेज से कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1977 में वीर स्वतंत्रता सेनानी और आध्यात्मिक विभूति रानी मा गेइडन्ल्यू के वैयक्तिक सहायक की जिम्मेदारी दी गई। 1980 में, उन्हें हाफलोंग में नॉर्थ कछार हिल्स जिला परिषद के तहत स्कूलों का उपनिरीक्षक नियुक्त किया गया और वह 2011 में जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. डॉ. न्यूमे 1974 में स्थापित ज़ेलियनग्रोंग हेराका एसोसिएशन, नॉर्थ ईस्ट इंडिया के संस्थापक महासचिव हैं। उन्होंने धर्मत्याग की निंदा की और उत्तर-पूर्व क्षेत्र में बलपूर्वक धर्मांतरण के खिलाफ विद्रोह करते हुए स्वदेशी संस्कृति और आस्था का प्रचार किया। महिला सशक्तीकरण और लड़कियों की शिक्षा के प्रति उनके जबरदस्त योगदान को व्यापक रूप से जाना जाता है। उन्होंने अनेक वंचित और गरीब छात्रों की सहायता की और उन्हें अपने सपने साकार करने में मदद की।

4. डॉ. न्यूमे ने 2009 की शांति वार्ता में अपने जीवन को जोखिम में डालकर नागा और दिमसा समुदायों के बीच जातीय संघर्ष को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पवित्र पुस्तक टिंगवांग हिंगडे का लिप्यंतरण किया और रानी मा गेइडन्ल्यू की जीवनी लिखी।

5. डॉ. न्यूमे को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें स्वदेशी हेराका धर्म और संस्कृति को संरक्षित करने तथा उसे बढ़ावा देने और उत्तर-पूर्व क्षेत्र में सामाजिक उत्थान के लिए ज़ेलियनग्रोंग हेराका एसोसिएशन के नाम पर पुणे, बॉम्बे की जन कल्याण समिति द्वारा गुरुजी समाज प्रबंधन पुरस्कार (1997); हेराका परंपरा और धर्म की रक्षा में उनकी निस्वार्थ सेवा के लिए भाऊराव देवराज स्मृति सेवा सम्मान (2010), लखनऊ; कई समुदायों को अपने पारंपरिक धर्म से दोबारा जुड़ने के लिए प्रेरित करने और राष्ट्रीय दृष्टि के साथ समुदायों और क्षेत्रों के बीच बंधन को मजबूत करने में उनके अथक प्रयासों के लिए विवेकानंद केंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर सम्मान, 2015 और जेंडर एम्पावरमेंट तथा उत्तर पूर्वी समाज के समग्र विकास में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए एनआईटीटीई यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टर ऑफ साइंस (मानद उपाधि) (2018) से सम्मानित किया गया है।